दैनिक भास्कर
नई दिल्ली 08-05-2022

नई सोच ब्रिटेन के 30 हजार स्कूलों में काइंडनेस को बनाया गया सिलेबस का हिस्सा

स्कूल के विद्यार्थियों को दयालुता पढ़ा रहे अंग्रेज

लंदन से भास्कर के लिए
एना सोफिया सॉलिस

इन दिनों ब्रिटेन के स्कूलों में बच्चों को दयालु बनाने के लिए 'सामाजिक आंदोलन' चल रहा है। बच्चों को दयालुता की ताकत का अहसास कराया जा रहा है। दरअसल, स्कूलों में दयालुता (काइंडनेस) को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है, जो कच्ची उम्र से ही दयालुता का अभ्यास करना सिखाता है। करीब 30 हजार से अधिक स्कूल दयालुता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बना चुके हैं। काइंडनेस यूके संस्था शिक्षकों-स्कूलों को 50 हजार से अधिक दयालुता किट बांट चुकी है। किट में बच्चों को दयालुता सिखाने के लिए एक प्रोग्राम बनाया गया है, जिसमें दयालुता पर चर्चा से लेकर गतिविधियां तक शामिल हैं। ब्रिटिश रेड क्रॉस सोसायटी भी शिक्षकों व बच्चों को दयालुता की शक्ति से रूबरू करा रही है।

काइंडनेस यूके के सीईओ डेविड जैमिली ने दैनिक भास्कर को बताया कि भारत की संस्कृति में पहले से ही दया और परोपकार की संस्कृति निहित है। भारत स्कूली पाठ्यक्रम में औपचारिक रूप से दयालुता को शामिल करके दुनिया के लिए शानदार उदाहरण पेश कर सकता है। देश की विशाल आबादी दयालुता फैलाने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, क्योंकि कई स्थापित और उभरते देश भारत को नेतृत्व के लिए देखते हैं। लॉन्सहिल एकेडमी की शिक्षिका मैकिनटोस बताती हैं कि यह बेहतरीन इनोवेशन है। हम स्कूलों में दयालुता वीक मनाते हैं। दयालुता को बच्चों के टाइम टेबल में शामिल किया है। बच्चों की दयालुता समिति बनाई गई है। हर दयालु समूह अपने संसाधनों का इस्तेमाल करके धन जुटाता है। बच्चों को हफ्ते में दयालुता के 5 टास्क के असाइनमेंट भी दिए जाते हैं। इससे उनमें यह विश्वास पैदा हो रहा है कि वे अपने अच्छे कामों से आस-पास की दुनिया में बदलाव ला सकते हैं।

▪ सर्वे: दयालुता घट रही

हाल ही में ससेक्स यूनिवर्सिटी ने 60 हजार लोगों पर दयालुता को लेकर सबसे बड़ा अध्ययन किया। इसका नेतृत्व करने वाले मनोविज्ञान के प्रो. रॉबिन बनर्जी के मुताबिक, महिलाएं ज्यादा दयालु होती हैं। आय, कमाई, संपन्नता दयालुता का गुण प्रभावित नहीं करती।